Sonam Bula
Assistant Professor (Guest Faculty)
Dept. of Geography
A.N.D. College, Shahpur Patory, Samastipur

07/2/2022
Monday

For B.A. – III (Hons)
Paper – III, Geography of India & Bihar

Lecture – 35

Scanned with CamScanner

UNIT-2 PRODUCTION, DISTRIBUTION AND GEOGRAPHICAL CONDITION OF RICE IN INDIA

भारत में चावल का उत्पादन, वितरण एवं भौगोलिक दशा

भारत की अधिकतर जनसंख्या का प्रमुख भोजन चावल है। यद्यपि यह एक उष्ण आर्द्र कटिबंधीय फ़सल है, इसकी 3000 से भी अधिक किस्में हैं जो विभिन्न जलवायु प्रदेशों में उगाई जाती है। इसकी कृषि समुद्रतल से 2000 m तक की ऊँचाई तक एवं पूर्वी भारत के आर्द्र भागों से लेकर उ०-प० भारत के शुष्क परंतु सिंचित क्षेत्र पंजाब, हरियाणा, प० उत्तर प्रदेश व उत्तरी राजस्थान में, सफलतापूर्वक की जाती है। दक्षिणी राज्यों तथा पश्चिम बंगाल में जलवायु अनुकूलता के कारण एक कृषि वर्ष में चावल की दो या तीन फसलें बोई जाती हैं। प० बंगाल के किसान चावल की तीन फसलें लेते हैं जिन्हें - औस, अमन तथा बोरो कहा जाता है। परंतु हिमालय तथा देश के उ०-प० भागों में यह द०-प० मानसून ऋतु में खरीफ फसल के रूप में उगाई जाती है।

भारत विश्व का 21.2% चावल उत्पादन करता है तथा चीन के बाद भारत का विश्व में दूसरा स्थान है (2015) देश के कुल बोए क्षेत्र के एक-चौथाई भाग पर चावल बोया जाता है। वर्ष 2015-16 में देश के प्रमुख चावल उत्पादक राज्य प० बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब थे। चावल की प्रति हेक्टेयर पैदावार पंजाब, तमिलनाडु, हरियाणा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, प० बंगाल तथा केरल राज्यों में अधिक है। इसमें से पहले चार राज्यों में लगभग संपूर्ण चावल क्षेत्र सिंचित है। पंजाब व हरियाणा पारंपरिक

Scanned with CamScanner

रूप से चावल उत्पादक राज्य नहीं है। हरित क्रांति के अंतर्गत हरियाणा, पंजाब के सिंचित क्षेत्रों में चावल की कृषि 1970 से प्रारंभ की गई। उत्तम किस्म के बीजों, अपेक्षाकृत अधिक खाद तथा कीटनाशकों का प्रयोग एवं शुष्क जलवायु के कारण फसलों में रोग प्रतिरोधकता आदि कारक इस प्रदेश में चावल की अधिक पैदावार के उत्तरदायी हैं। इसकी प्रति हेक्टेयर पैदावार मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व ओडिशा के वर्षा पर निर्भर क्षेत्रों में बहुत कम है।

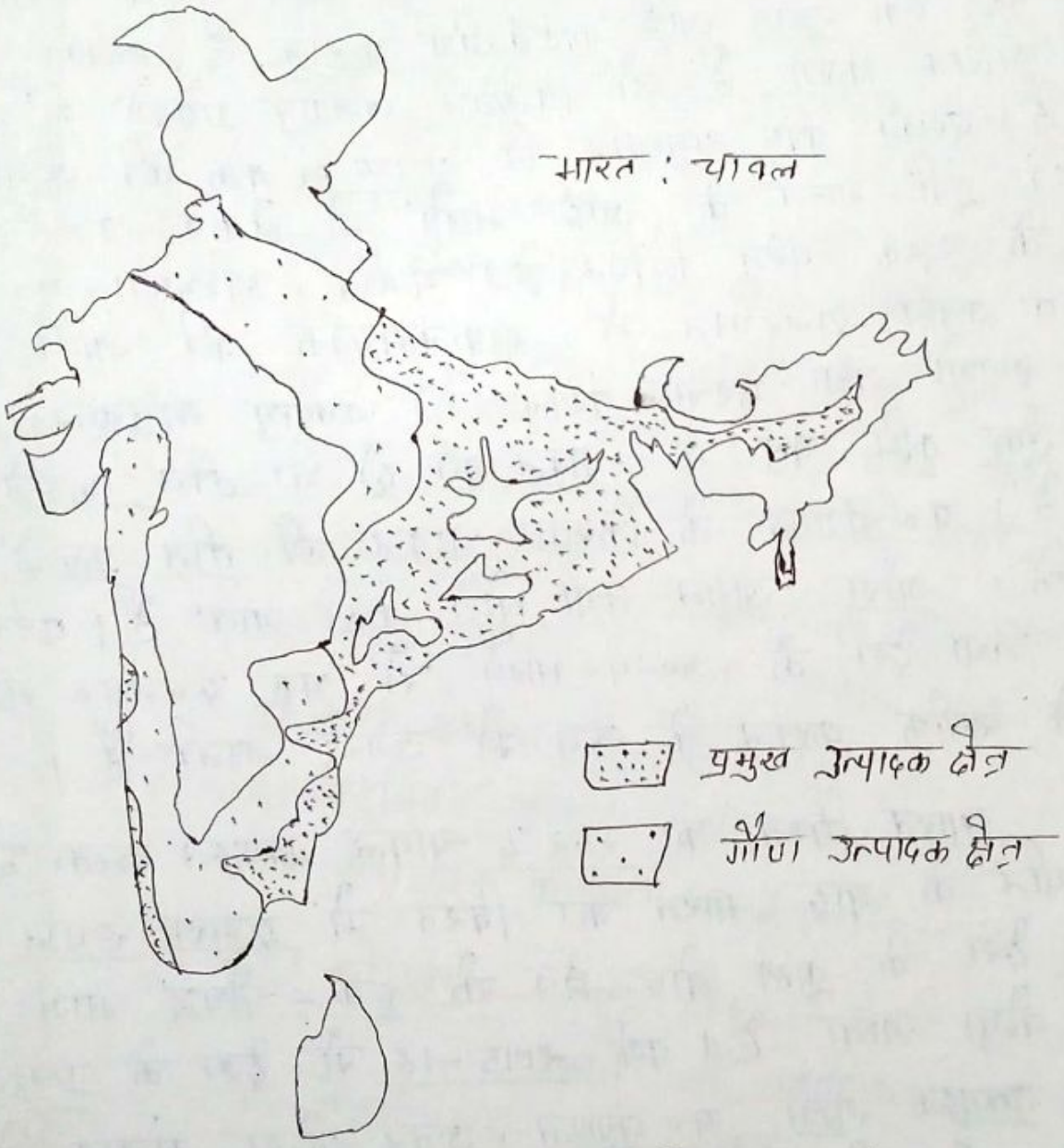

चावल की उपज के लिए भौगोलिक दशाएँ →

1) चावल की उपज के लिए ऊँचा तापमान आवश्यक है। वर्ष का औसत तापमान 25°C रहना इस फसल के लिए उपयोगी है।

Scanned with CamScanner

जल की अधिक आवश्यकता होती है। चावल की खेती निचले भू-भागों में होती है, जहाँ जल भरा रह सके। औसत वार्षिक वर्षा किसी प्रकार 200 cm से कम नहीं होनी चाहिए। जिन स्थानों पर कम वर्षा होती है वहाँ सिंचाई की आवश्यकता पड़ जाती है।

3) चावल के लिए ऐसी मिट्टी होनी चाहिए जिसमें चीका की मात्रा अधिक हो, क्योंकि चीकायुक्त मिट्टी अधिक समय तक आर्द्रता धारण कर सकती है। इस प्रकार की मिट्टी नदियों की घाटियों, डेल्टाओं तथा तटवर्ती भागों में प्राय: मिल जाती है।

4) भूमि समतल होनी चाहिए ताकि वर्षा अथवा सिंचाई द्वारा प्राप्त जल पर्याप्त समय तक खेतों में रह सके। पहाड़ी ढालों पर चावल की कृषि करने में असुविधा होती है, इसलिए ढालों पर सीढ़ियाँ बना ली जाती हैं ताकि जल बह न जाए।

5) चावल उत्पन्न करने के लिए कुशलता एवं अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। जोतना, बोना, पौध लगाना, फसल काटना आदि अनेक कार्य कृषकों को करने पड़ते हैं। कम संख्या में श्रमिक इन सभी कार्यों को समयानुसार नहीं कर सकते।

चावल की कृषि की विशेषताएँ

तीन फसलें :— पश्चिमी बंगाल और तमिलनाडु में चावल की तीन फसलें उगाई जाती हैं — औस, अमन, बोरो। औस सितंबर-अक्टूबर के महीने में, अमन जाड़ों में तथा बोरो गर्मी की ऋतु में काटी जाती है। अमन की फसल जो कि शीतकाल में उत्पन्न की जाती है, सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है। यह जून से अगस्त तक के महीनों में बोई जाती है और नवंबर से जनवरी के मध्य तक काट ली जाती है। औस की फसल मार्च से जुलाई तक बो दी जाती है और सितंबर-अक्टूबर में काट ली जाती है, बोरो अथवा गर्मी

Scanned with CamScanner

की फसल को नवंबर से जनवरी तक बो देते हैं जो मार्च-मई के कालांतर में काट लेते हैं। भारत के कुछ भागों में चावल की दो फसलें होती हैं जबकि कुछ अन्य भागों में एक ही फसल होती है। मध्य प्रदेश में चावल की एक ही फसल होती है। चावल मई - जून में बो दिया जाता है तथा सितंबर - नवंबर में काट लिया जाता है।

चावल बोने की विधियाँ → इसे बोने की तीन विधि है —

(i) छितराकर (ii) खोदकर (iii) एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाकर या प्रतिरोपण द्वारा। पहाड़ी ढालों पर जहाँ वनों को साफ कर लिया जाता है और जहाँ भूमि कम उपजाऊ होती है तथा श्रमिक कम होते हैं, वहाँ चावल छितराकर बोया जाता है। खोदकर बोने का तरीका प्रायद्वीप के प्रदेशों में अधिक प्रचलित है। तीसरी विधि जो एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाकर बोने की है, अधिक लाभप्रद सिद्ध हुई है। परंतु इस विधि में अधिक श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है। छोटे - छोटे भूमि के टुकड़ों में खूब खाद देकर बहुतायत से चावल उगा लिया जाता है। 4-5 सप्ताह में जब चावल के पौधे पर्याप्त बड़े हो जाते हैं तो उन्हें उखाड़कर बड़े - बड़े खेतों में जाकर फिर से लगाया जाता है। इस कार्य के लिए अधिक चतुर श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

जापानी विधि → इस विधि के निम्न आधार हैं — (i) उत्तम बीजों का प्रयोग (ii) उच्च भूमि पर क्यारियों में बोना (iii) जब पौधा साधारण बड़ा हो जाए तो उसे 15-25 cm की दूरी पर क्यारियों में लगाना, ताकि पौधों के नीचे खाद देने तथा निराने की सुविधा रहे (iv) कम्पोस्ट की खाद तथा अमोनियम सल्फेट की उर्वरक का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना। यह बड़ी सरल विधि है, इसमें बहुमूल्य मशीनों का प्रयोग नहीं किया जाता।

Scanned with CamScanner